सांस्कृतिक निकटता

बरसों से भारत और ईरान के सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। फिलवक्त, भले ही ईरान कुछ कठिन दौर से जूझ रहा हो लेकिन 'भारतीय-ईरानी लेखक सम्मिलन' पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। पिछले दिनों नई दिल्ली के साहित्य अकादेमी के सभागार में इस्लामिक गणराज्य ईरान के सांस्कृतिक परामर्शदाता मोहम्मद अली रब्बानी जब आए तो माहौल में आत्मीयता की गरमाहट महसूस की जा सकती थी। वे उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। यह कार्यक्रम साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और इस्लामिक गणराज्य ईरान के दूतावास ने संयुक्त रूप से आयोजित किया था।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने भारत और ईरान के सुदीर्घ सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित करते हुए कहा, "समान आचार-विचार और संस्कृति के बिना संबंध नहीं बन सकते। अगर बन भी जाएं तो उनमें स्थायित्व नहीं रहता।" इस मौके पर हिंदी रचनाकार और फारसी साहित्य की मर्मज्ञ नासिरा शर्मा ने भारत के कई प्राचीन ग्रंथों का फारसी में अनुवाद उपलब्ध होने और उसके कारण उन दुर्लभ ग्रंथों को पढ़ पाने के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह दोनों देशों की भाषाओं के संबंध का पुख्ता प्रमाण है। मोहम्मद अली रब्बानी ने भारत और ईरान के संबंध में संस्कृतिकर्मियों, कलाकारों, अदीबों और विद्वानों के योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने दोनों देशों के साहित्य को एक-दूसरे के और पास लाने की जरूरत को देखते हुए ज्यादा से ज्यादा अनुवाद के काम पर जोर दिया। कुछ ईरानी और भारतीय कवियों ने इस मौके पर कविता पाठ भी किया।

आउटलुक डेस्क